ग्रन्थमाला ‘आदर्श राष्ट्ररचना’ : हिन्दू राष्ट्र – खण्ड १

हिन्दू राष्ट्र क्यों आवश्यक है ?

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

श्री. रमेश हनुमंत शिंदे (प्रवक्ता, हिन्दू जनजागृति समिति)

श्री. चेतन धनंजय राजहंस (प्रवक्ता, सनातन संस्था)

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४३, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९६, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला २९, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

अक्टूबर २०२३ तक ३६४ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९४ लाख ४६ सहस्र प्रतियां !

अनुक्रमणिका

- 卐 ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय ५
- 卐 संस्कृत भाषानुरूप हिन्दीके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन ! ७
- 卐 सनातनके ग्रंथोंमें प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ हिन्दीकी कारणमीमांसा ८
- 卐 प्रस्तुत ग्रन्थकी असामान्यता समझ लें ! ९
- 卐 भूमिका १०
- १. प्रस्तावनात्मक विवेचन १३
- २. राष्ट्रीय समस्याओंके दृष्टिकोणसे 'हिन्दू राष्ट्र' क्यों आवश्यक ? १७
- ३. धार्मिक समस्याओंकी दृष्टिसे 'हिन्दू राष्ट्र' क्यों बनना चाहिए ? ४७
- ४. प्रचलित राज्यपद्धतियोंकी अपेक्षा 'हिन्दू राष्ट्र'ही श्रेष्ठ क्यों ? ६९
- ५. धर्माधिष्ठित 'हिन्दू राष्ट्र' क्या है ? ९४
- ६. धर्माधिष्ठित 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु योगदानकी आवश्यकता ! ९७
- ७. अखिल मानवजातिके हितमें हिन्दू धर्माधारित राज्यप्रणाली ही आवश्यक ! १००
- 卐 परिशिष्ट १ : 'हिन्दू राष्ट्र' अथवा 'हिन्दू राष्ट्र'की मांग करना, संवैधानिक है अथवा असंवैधानिक ? १०४

सनातनकी चैतन्यमय ग्रन्थसम्पदाकी प्रमुख विशेषताएं !

- 卐 वैज्ञानिक युगके पाठकोंको समझमें आनेवाली आधुनिक वैज्ञानिक भाषामें (उदा. प्रतिशत) ज्ञान !
- 卐 सैद्धान्तिक विवेचन ही नहीं; अपितु प्रत्यक्ष आचरण सम्बन्धी मार्गदर्शन !
- 卐 पृथ्वीपर कहीं भी उपलब्ध नहीं ऐसे अमूल्य ईश्वरीय ज्ञानका अन्तर्भाव !
- 卐 अध्यात्मके विविध पहलुओंके सन्दर्भमें वैज्ञानिक उपकरणोंद्वारा किए शोध, सूक्ष्म स्तरीय प्रक्रिया दर्शानेवाले चित्र एवं लेखन!

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीका परिचय !

१. 'सम्मोहन-उपचार विशेषज्ञ'के रूपमें मुंबईमें व्यवसाय (१९७८ से १९९५)

२. अध्यात्मप्रसार हेतु 'सनातन संस्था'की स्थापना

३. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) (टिप्पणी) स्थापनाकी उद्घोषणा व कार्यारम्भ (वर्ष १९९८)

[टिप्पणी : हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य) - 'हीनान् गुणान् दूषयति इति हिन्दुः ।' अर्थात जो 'कनिष्ठ, हीन, रज एवं तम गुणोंका नाश करता है वह हिन्दू है ।' ऐसे सात्त्विक लोगोंका राष्ट्र अर्थात 'हिन्दू राष्ट्र' ।]

४. गुरुकुलसमान 'सनातन आश्रम'की निर्मिति !

५. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : २१.११.२०२३ तक गुरुकृपायोगानुसार साधना कर १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४७ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

६. देवता, साधना, आचारपालन, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति एवं ग्रन्थ-प्रकाशन

७. शारीरिक, मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतियोंके विषयमें शोध

८. अपनी देह तथा उपयोगकी वस्तुओंमें हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोगका शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

९. आचारपालनके कृत्य, धार्मिक कृत्य एवं बुद्धि-अगम्य घटनाओंका वैज्ञानिक उपकरणोंद्वारा शोध

१०. चित्रकला, नृत्य, संगीत आदि के के सात्त्विक प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी शोध

११. ज्योतिषशास्त्र तथा नाडीभविष्य की सहायतासे विविधांगी शोध-कार्य

१२. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-संपादक

(सम्पूर्ण परिचय देखें – 'www.Sanatan.org')

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

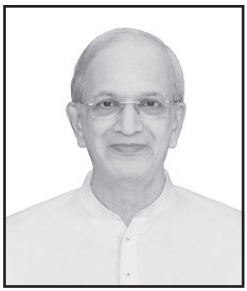

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥
– जयंत बाळाजी आठवले
१५·५·१९९६

श्री. रमेश शिंदे (प्रवक्ता, हिन्दू जनजागृति समिति)

आप 'सनातन धर्मभूषण', 'हिन्दू कुलभूषण पुरस्कार' आदि पुरस्कारोंसे गौरवान्वित हैं एवं धर्मप्रसारकके रूपमें देशमें यात्रा करते हैं । 'बुद्धिजीवियोंका अहंकार', धर्मांतर, 'हिन्दू राष्ट्र', 'मनुस्मृति', 'लोकतन्त्रकी दुष्प्रवृत्तियां' आदि विषयोंके सनातनके ग्रंथोंके संकलनकर्ता हैं ।

श्री. चेतन राजहंस (प्रवक्ता, सनातन संस्था)

आप 'सनातन धर्मवीर'की उपाधिसे सम्मानित हैं तथा दूरदर्शन वाहिनियोंपर हिन्दू धर्मका पक्ष रखते हैं । सनातन के ग्रन्थोंका संकलन एवं हिन्दू संगठन हेतु यात्रा करते हैं। गोवामें होनेवाले 'अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन' के आयोजनमें आपका सक्रिय सहभाग रहता हैं ।

भूमिका

विश्वमें ईसाईयोंके १५७, मुसलमानोंके ५२, बौद्धोंके १२, जबकि यहूदियोंका १ राष्ट्र है । हिन्दुओंका राष्ट्र इस सौरमण्डलमें कहां है ? हां, हिन्दुओंका एक सनातन राष्ट्र १९४७ तक इस पृथ्वीपर था । आज इस राष्ट्रकी स्थिति क्या है ?

आजका लोकतन्त्र और छत्रपति शिवाजी महाराजका 'हिन्दू राष्ट्र' !

'लोगोंद्वारा, लोगोंके लिए, लोगोंका शासन', लोकतन्त्रकी ऐसी व्याख्या, भारत जैसे विश्वके सबसे बडे देशके लिए 'स्वार्थांधोंद्वारा स्वार्थके लिए चयनित (निर्वाचित) स्वार्थी शासनकर्ताओंका शासन', ऐसी हो चुकी है । इस ग्रन्थमें भारतकी अनेक समस्याएं वर्णित हैं । इन्हें पढकर कुछ लोगोंके मनमें सन्देह उत्पन्न होगा कि 'हिन्दू राष्ट्र'में ये समस्याएं दूर कैसे होंगी ? क्या इतिहासमें ऐसा कभी हुआ है ? ऐसा समझनेवाले लोग यह समझ लें कि – हां, इतिहासमें ऐसा हुआ है ! छत्रपति शिवाजी महाराजका 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित होते ही ऐसी तत्कालीन समस्याएं दूर हुई थी ! छत्रपति शिवाजी महाराजका जन्म होनेके पूर्व भी आजके समान ही हिन्दू स्त्रियोंका शील सुरक्षित नहीं था, प्रत्यक्ष जीजामाताकी जिठानीको ही पानी लाते समय यवन सरदारने अगवा कर लिया था । उस समय भी मन्दिर भ्रष्ट किए जाते थे एवं गोमाताकी गर्दनपर कब कसाईका छुरा चल जाएगा, यह कोई बता नहीं सकता था । महाराजका 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित होते ही मन्दिर ढहाना बंद हुआ, इतना ही नहीं; अपितु मन्दिर ढहाकर बनाई मस्जिदोंका रूपान्तरण पूर्ववत मन्दिरोंमें हुआ । मौन रहकर क्रन्दन करनेवाली गोमाताएं आनन्दित होकर रम्भाने लगीं । 'गोहत्या बन्द की जाए !', ऐसी मांगके लिए कभी शासन के पास लाखों हस्ताक्षर नहीं भेजे गए अथवा महाराजने भी कोई 'गोहत्या प्रतिबन्धक विधेयक' मन्त्रीमण्डलमें प्रस्तुत नहीं किया । केवल 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना ही हिन्दूद्वेषियोंको भयभीत करनेके लिए पर्याप्त थी !

आज हमें महंगाई दिखती है । क्या कभी पढा है कि 'महाराजके शासनकालमें प्रजा महंगाईसे त्रस्त थी' ? 'जय जवान, जय किसान'की घोषणा करनेवाले शासनकर्ता आज जवान एवं किसान, दोनोंकी हो रही अमानवीय मृत्यु देखकर भी मौन हैं । महाराजको तो केवल कृषकोंके (किसानोंके) प्राण ही नहीं, अपितु उनके द्वारा उपजाई फसल भी अमूल्य लगती थी । उन्होंने ऐसी आज्ञा ही दी थी कि 'कृषकोंद्वारा उपजाई फसलके डण्ठलको भी कोई हाथ न लगाए ।' महाराजने 'किसानों'की ही भांति 'जवानोंको'भी सम्भाला था । वे लडाईमें घायल हुए अनेक सैनिकोंको पुरस्कारके साथ सोनेके आभूषण देकर सम्मानित करते थे । कारगिल युद्धमें वीरगति प्राप्त करनेवाले सैनिकोंकी विधवाओंके लिए वर्ष २०१० में 'आदर्श' सोसाइटी बनाई गई; परन्तु उसमें एक भी सैनिककी विधवाको सदनिका (फ्लैट) नहीं मिली । भ्रष्टासुरोंने ही वे सभी सदनिकाएं हडप लीं ! इसके विपरीत महाराजने सिंहगढके युद्धमें वीरगति प्राप्त करनेवाले तानाजीके पुत्रका विवाह कर उनके परिजनोंको सांत्वना दी !

'हिन्दू राष्ट्र'में भारतको त्रस्त करनेवाली बाह्य समस्याएं भी दूर होंगी !

'हिन्दू राष्ट्र'में आन्तरिक समस्याओंके साथ बाह्य समस्याएं भी दूर होंगी । इन समस्याओंमें मुख्य हैं पाकिस्तान एवं चीनद्वारा भारतपर सम्भावित आक्रमण । शिवकालमें भी ऐसी ही स्थिति थी । औरंगजेब 'शिवा'का छोटासा राज्य नष्ट करनेको तुला था; परन्तु 'महाराजका राज्याभिषेक और विधिवत 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित हुआ', यह सुनते ही उसके पैरोंतलेकी भूमि खिसक गई ! तदनन्तर आगे महाराजके स्वर्गारोहणतक वह मात्र महाराष्ट्रमें ही नहीं; अपितु दक्षिणमें भी नहीं आया ! एक बार 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हुई कि हमारे सर्व पडोसी अपनेआप सीधे हो जाएंगे !

'हिन्दू राष्ट्र'में मुसलमानोंका क्या करोगे ?

'हिन्दू राष्ट्र'का विषय निकलते ही एक निरर्थक प्रश्न तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादियोंद्वारा पूछा जाता है, 'हिन्दू राष्ट्र'में मुसलमानोंके साथ कैसा व्यवहार किया जाएगा ? वास्तवमें यह प्रश्न मुसलमानोंको पूछना

चाहिए। वे नहीं पूछते । वे तो यही कहते हैं, 'हंसके लिया पाकिस्तान, लडके लेंगे हिन्दुस्तान !'

तथापि इस प्रश्नका भी उत्तर है । आगामी 'हिन्दू राष्ट्र'में मुसलमानोंसे ही नहीं; अपितु सभी पन्थियोंसे वैसा ही व्यवहार किया जाएगा जैसा शिवराज्यमें किया गया था !

संक्षेपमें, सूर्यके उगते ही अन्धकार अपनेआप नष्ट हो जाता है, सर्व दुर्गन्ध वातावरणमें लुप्त हो जाती है । अन्धकार अथवा दुर्गन्धसे कोई नहीं कहता, 'दूर हटो, सूर्य उग रहा है !' यह अपनेआप ही होता है । उसी प्रकार आज भारतमें फैला विविध समस्यारूपी अन्धकार एवं दुर्गन्ध 'हिन्दू राष्ट्र'के स्थापित होते ही अपनेआप नष्ट हो जाएंगे । धर्माचरणी शासनकर्ताओंके कारण भारतकी सर्व समस्याएं दूर होंगी तथा सदाचारके कारण सर्व जनता भी सुखी होगी !

किन्हीं एक-दो समस्याओंके विरोधमें लडनेकी अपेक्षा 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित करना आवश्यक !

मात्र भारतके लोगोंके लिए ही नहीं; अपितु अखिल मानवजातिके कल्याण हेतु स्थापित किया जानेवाला 'हिन्दू राष्ट्र' सहज ही स्थापित नहीं होगा । पाण्डव मात्र पांच गांव चाहते थे, वे भी उन्हें सहजतासे नहीं मिल सके । हमें तो कश्मीरसे कन्याकुमारीतक अखण्ड 'हिन्दू राष्ट्र' चाहिए । इसके लिए बडा संघर्ष करना होगा । भारतकी किन्हीं एक-दो समस्याओंके (उदा. गोहत्या, धर्मान्तरण, गंगा नदीका प्रदूषण, कश्मीर, राममन्दिर, स्वभाषारक्षा आदिके) विरोधमें पृथक-पृथक लडनेकी अपेक्षा सर्व समविचारी व्यक्ति एवं संस्थाएं मिलकर 'हिन्दू राष्ट्र-स्थापना'का ही ध्येय रखकर कार्य करेंगे, तो यह संघर्ष थोडा सुलभ होगा ।

स्वामी विवेकानंद, योगी अरविंद, वीर सावरकर जैसे हिन्दू धर्मके महान योद्धाओंको अपेक्षित धर्माधिष्ठित 'हिन्दू राष्ट्र' स्थापित होने हेतु आवश्यक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक सामर्थ्य हिन्दू समाजको मिले, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! - **संकलनकर्ता**